शोधामृत
(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अंतर्राष्ट्रीय सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका)

**ISSN : 3048-9296 (Online)**
**3049-2890 (Print)**
**IIFS Impact Factor-5.375**
Vol.-3; issue-3 (July-Sept.) 2026
Page No- 190-194
©2026 Shodhaamrit
https://shodhaamrit.gyanvividha.com

**Author's :**

**सुशील कुमार**
शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर.

Corresponding Author :

**सुशील कुमार**
शोधार्थी, हिंदी विभाग, गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी, अमृतसर.

## पीली छतरी वाली लड़की उत्तर-आधुनिक परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

उदय प्रकाश समकालीन हिंदी कथा-साहित्य के उन महत्वपूर्ण रचनाकारों में हैं जिन्होंने वैश्वीकरण, उदारीकरण, बाज़ारवाद, उपभोक्तावाद, सत्ता-संरचना तथा हाशिए के जीवन को अपनी कहानियों का केंद्र बनाया। पीली छतरी वाली लड़की उनकी अत्यंत चर्चित लंबी कहानी है, जिसमें आधुनिक महानगरीय जीवन, बदलते सामाजिक संबंध, युवा पीढ़ी की मानसिकता, वर्गीय असमानता, स्त्री की स्वतंत्र पहचान और उत्तर-आधुनिक जीवन-बोध का सशक्त चित्रण मिलता है। कहानी का कथानक केवल प्रेम कथा नहीं है, बल्कि बदलते भारतीय समाज की जटिलताओं का गहन सामाजिक दस्तावेज है। प्रस्तुत शोध-पत्र में कहानी का अध्ययन उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण से किया गया है।

**बीज शब्द** : उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, उत्तर-आधुनिकता, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद।

**भूमिका :** समकालीन हिंदी कहानी में उदय प्रकाश का विशिष्ट स्थान है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में उस भारत का चित्र प्रस्तुत किया है जो आर्थिक उदारीकरण के बाद तेजी से बदल रहा था। इस परिवर्तन ने सामाजिक संबंधों, नैतिक मूल्यों, शिक्षा व्यवस्था, प्रेम, परिवार और व्यक्ति की पहचान को गहराई से प्रभावित किया। पीली छतरी वाली लड़की इसी संक्रमणकालीन समाज का प्रतिनिधित्व करती है। यह कहानी विश्वविद्यालय परिसर, महानगरीय जीवन और युवा मनोविज्ञान की पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसमें प्रेम केवल भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना, आर्थिक विषमता और सांस्कृतिक परिवर्तन के बीच संघर्षरत मानवीय संवेदना का प्रतीक बन जाता है। उत्तर-आधुनिक समाज में जहाँ हर वस्तु बाज़ार का हिस्सा बनती जा रही है, वहीं मनुष्य भी उपभोग की संस्कृति का अंग बनता दिखाई देता है। कहानी इसी विडंबना को उजागर करती है।

**कहानी का संक्षिप्त परिचय : पीली छतरी वाली लड़की** समकालीन हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार **उदय प्रकाश** की सर्वाधिक चर्चित और बहुचर्चित लंबी कहानियों में से एक है। यह कहानी इक्कीसवीं सदी के आरंभिक भारतीय समाज, विशेषकर उदारीकरण, वैश्वीकरण और उपभोक्तावादी संस्कृति के दौर में बदलते सामाजिक, आर्थिक और

सांस्कृतिक परिवेश का सशक्त दस्तावेज़ है। इसमें लेखक ने विश्वविद्यालय परिसर, महानगरीय जीवन, युवा पीढ़ी की आकांक्षाओं, वर्गीय असमानताओं, सत्ता-संरचना, शिक्षा व्यवस्था तथा मानवीय संबंधों में आए बदलावों का अत्यंत यथार्थ और संवेदनशील चित्रण किया है। कहानी का केंद्र एक विश्वविद्यालय का परिवेश है, जहाँ विभिन्न सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमियों से आए छात्र-छात्राएँ अध्ययन करते हैं। इसी वातावरण में कथानायक की दृष्टि एक ऐसी युवती पर पड़ती है, जो हमेशा **पीली छतरी** लेकर दिखाई देती है। यही युवती कहानी में ^पीली छतरी वाली लड़की* के रूप में उभरती है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक, आत्मविश्वासी और रहस्यमय है। कथानायक उसके प्रति आकर्षित होता है, किंतु यह आकर्षण केवल प्रेम या सौंदर्य तक सीमित नहीं रहता। धीरे-धीरे यह संबंध व्यक्ति, समाज और व्यवस्था के अनेक जटिल प्रश्नों को उद्घाटित करता है। कहानी में पीली छतरी केवल एक वस्तु नहीं, बल्कि एक महत्त्वपूर्ण प्रतीक है। यह आधुनिक जीवन की चमक, आकर्षण, अस्थिरता, सुरक्षा की चाह और बदलती सामाजिक मानसिकता का संकेत देती है। उदय प्रकाश प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से साधारण घटनाओं को व्यापक सामाजिक अर्थ प्रदान करते हैं। इसलिए यह कहानी केवल एक प्रेम-कथा नहीं, बल्कि उत्तर-आधुनिक भारतीय समाज की जटिलताओं का कलात्मक आख्यान बन जाती है।

इस कहानी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें उत्तर-आधुनिक जीवन-बोध स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। लेखक ने यह दिखाया है कि आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के बाद मनुष्य का जीवन किस प्रकार बाज़ार, उपभोक्तावाद और प्रतिस्पर्धा से प्रभावित हुआ है। शिक्षा, प्रेम, मित्रता, नैतिकता और सामाजिक संबंध भी बाज़ार की संस्कृति से अछूते नहीं रहे। व्यक्ति की पहचान उसके ज्ञान, संवेदनशीलता या नैतिकता से अधिक उसके आर्थिक स्तर, उपभोग की क्षमता और सामाजिक प्रतिष्ठा से निर्धारित होने लगी है।

कहानी इसी परिवर्तन की गहरी आलोचना प्रस्तुत करती है। कहानी में स्त्री-पात्र का चित्रण भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। 'पीली छतरी वाली लड़की' पारंपरिक रूढ़ियों में बँधी हुई स्त्री नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्र सोच, आत्मविश्वास और आत्मनिर्णय की क्षमता रखने वाली आधुनिक युवती है। उसके माध्यम से लेखक स्त्री की बदलती सामाजिक स्थिति, उसकी स्वतंत्रता और उसकी पहचान के प्रश्न को सामने लाते हैं। यह चित्रण समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री-विमर्श की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

उदय प्रकाश ने इस कहानी में शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियों, विश्वविद्यालयों में बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप, भ्रष्टाचार, अवसरों की असमानता तथा सामाजिक विषमता को भी प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। विश्वविद्यालय, जो ज्ञान और चिंतन का केंद्र होना चाहिए, वहाँ भी सत्ता, प्रभाव और आर्थिक असमानता का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। लेखक इस व्यवस्था की आलोचना करते हुए यह संकेत देते हैं कि आधुनिक संस्थाएँ भी सामाजिक न्याय और समान अवसर प्रदान करने में पूरी तरह सफल नहीं हो सकी हैं।

भाषा और शैली की दृष्टि से भी यह कहानी अत्यंत उल्लेखनीय है। उदय प्रकाश की भाषा सहज, प्रवाहपूर्ण, व्यंग्यात्मक और जीवन के निकट है। वे बोलचाल की भाषा, प्रतीकों, रूपकों तथा यथार्थपरक विवरणों का प्रभावी प्रयोग करते हैं। कहानी में अनेक स्थानों पर व्यंग्य और विडंबना के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि यह कहानी पाठक को केवल मनोरंजन नहीं देती, बल्कि उसे अपने समय और समाज के बारे में गंभीरता से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में **'पीली छतरी वाली लड़की'** को उत्तर-आधुनिक चेतना की प्रतिनिधि रचना माना जाता है। इसमें व्यक्ति के अकेलेपन, संबंधों के विघटन, बाज़ारवादी संस्कृति के प्रभाव, वर्गीय विषमता, स्त्री-अस्मिता, सत्ता-संरचना और सामाजिक परिवर्तन जैसे अनेक महत्वपूर्ण विषयों का समावेश है। यह कहानी भारतीय समाज के उस संक्रमणकाल को समझने में सहायता करती है, जब पारंपरिक मूल्य धीरे-धीरे बदल रहे थे और नई आर्थिक-सांस्कृतिक शक्तियाँ समाज को नई दिशा दे रही थीं। इस प्रकार, **'पीली छतरी वाली लड़की'** केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि समकालीन भारतीय समाज का संवेदनशील और

विचारोत्तेजक दस्तावेज़ है। उदय प्रकाश ने इस कहानी के माध्यम से आधुनिक जीवन की विडंबनाओं, मनुष्य की आंतरिक बेचैनी, सामाजिक असमानताओं और बदलती सांस्कृतिक चेतना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। यही कारण है कि यह कहानी हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों, शोधार्थियों और आलोचकों के लिए अध्ययन की एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण रचना मानी जाती है।

**उत्तर-आधुनिकता की अवधारणा :** उत्तर-आधुनिकता (Postmodernism) आधुनिकता के पश्चात विकसित हुई एक व्यापक वैचारिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक अवधारणा है, जिसने बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में विश्व के बौद्धिक विमर्श को गहराई से प्रभावित किया। यह किसी एक सिद्धांत या विचारधारा का नाम नहीं है, बल्कि आधुनिकता के स्थापित मूल्यों, सार्वभौमिक सत्यों, तर्कवाद और महान आख्यानों पर प्रश्नचिह्न लगाने वाली बहुआयामी दृष्टि है। उत्तर-आधुनिकता विविधता, बहुलता, विखंडन, स्थानीयता, अस्मिता और वैकल्पिक दृष्टिकोणों को महत्त्व देती है। आधुनिकता ने विज्ञान, तर्क, प्रगति और सार्वभौमिक सत्य को मानव विकास का आधार माना था। इसके विपरीत उत्तर-आधुनिकता यह मानती है कि कोई भी सत्य अंतिम या सार्वभौमिक नहीं होता, बल्कि प्रत्येक सत्य अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों से निर्मित होता है। इस कारण उत्तर-आधुनिक चिंतन किसी एक विचारधारा या सत्ता-केंद्र को अंतिम मानने के बजाय अनेक दृष्टिकोणों को समान महत्त्व प्रदान करता है।

उत्तर-आधुनिकता के प्रमुख विचारकों में **ज्याँ-फ़्रांस्वा ल्योतार**, **जाक देरिदा**, **मिशेल फूको** तथा **ज्याँ बौद्रियार** के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ल्योतार ने उत्तर-आधुनिकता को ^महान आख्यानों के प्रति अविश्वास*के रूप में परिभाषित किया। देरिदा ने विखंडन के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि किसी भी पाठ का केवल एक निश्चित अर्थ नहीं होता। फूको ने ज्ञान और सत्ता के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करते हुए बताया कि ज्ञान भी सत्ता-संरचनाओं से प्रभावित होता है, जबकि बौद्रियार ने उपभोक्तावादी समाज में मीडिया और आभासी यथार्थ की अवधारणा प्रस्तुत की। भारतीय संदर्भ में उत्तर-आधुनिकता का प्रभाव आर्थिक उदारीकरण, वैश्वीकरण, सूचना-प्रौद्योगिकी और संचार क्रांति के बाद अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। बदलती आर्थिक नीतियों, मुक्त बाज़ार व्यवस्था और डिजिटल संस्कृति ने सामाजिक जीवन, पारिवारिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति को गहराई से प्रभावित किया। परिणामस्वरूप साहित्य में हाशिए पर स्थित समुदायों, स्त्रियों, दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों तथा अन्य उपेक्षित वर्गों के अनुभवों को प्रमुखता मिलने लगी।

हिंदी साहित्य में उत्तर-आधुनिकता ने कथा-साहित्य को नए आयाम प्रदान किए। रचनाकारों ने पारंपरिक कथानकों और आदर्शवादी दृष्टिकोणों से हटकर विखंडित जीवन, पहचान के संकट, उपभोक्तावाद, बाज़ारवाद, मीडिया, सांस्कृतिक विस्थापन तथा सामाजिक असमानताओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। समकालीन कथाकारों, विशेष रूप से उदय प्रकाश, ने उत्तर-आधुनिक जीवन की जटिलताओं, व्यक्ति के अकेलेपन, व्यवस्था की विसंगतियों और बदलते सामाजिक मूल्यों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। इस प्रकार, उत्तर-आधुनिकता केवल एक साहित्यिक प्रवृत्ति नहीं, बल्कि आधुनिक समाज के बदलते स्वरूप को समझने की एक महत्त्वपूर्ण वैचारिक दृष्टि है। यह स्थापित मान्यताओं की पुनर्समीक्षा करते हुए बहुलता, संवाद, अस्मिता और वैकल्पिक अनुभवों को स्वीकार करने का आग्रह करती है। समकालीन हिंदी साहित्य, विशेषकर उदय प्रकाश की **'पीली छतरी वाली लड़की'** जैसी रचनाओं को समझने के लिए उत्तर-आधुनिकता की अवधारणा अत्यंत उपयोगी और प्रासंगिक सिद्ध होती है।

**वैश्वीकरण और बाज़ारवाद :** उदारीकरण के बाद भारतीय समाज में बाज़ार की भूमिका अत्यधिक बढ़ गई। कहानी में विश्वविद्यालय का वातावरण भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है। शिक्षा ज्ञान का माध्यम कम और रोजगार प्राप्त करने का साधन अधिक बनती दिखाई देती है। व्यक्ति की पहचान उसके चरित्र या ज्ञान से नहीं

बल्कि उसके आर्थिक स्तर, पहनावे और उपभोग की वस्तुओं से निर्धारित होने लगती है। पीली छतरी स्वयं एक प्रतीक बन जाती है जो आधुनिक उपभोक्तावादी जीवन की आकर्षक लेकिन क्षणभंगुर चमक को दर्शाती है।

**उपभोक्तावाद और मानवीय संबंध :** उत्तर-आधुनिक समाज में प्रेम और संबंध भी बाज़ार के प्रभाव से मुक्त नहीं रह गए हैं। कहानी में संबंधों की स्थायित्वहीनता स्पष्ट दिखाई देती है। मनुष्य धीरे-धीरे वस्तुओं के माध्यम से अपनी पहचान बनाने लगता है। भावनात्मक संबंधों की जगह प्रदर्शन और उपभोग का महत्व बढ़ जाता है। उदय प्रकाश इस परिवर्तन की तीखी आलोचना करते हैं।

**स्त्री-विमर्श :** कहानी की नायिका पारंपरिक स्त्री नहीं है। वह स्वतंत्र है, आत्मविश्वासी है और अपनी इच्छा के अनुसार निर्णय लेने का साहस रखती है। वह पुरुष की संपत्ति या आश्रित नहीं बनती। उत्तर-आधुनिक समाज में स्त्री अपनी पहचान स्वयं निर्मित करना चाहती है। यही कारण है कि कहानी में स्त्री केवल प्रेमिका नहीं, बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में सामने आती है।

**वर्गीय असमानता :** कहानी में आर्थिक विषमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। विश्वविद्यालय समान अवसर का प्रतीक माना जाता है, किंतु वहाँ भी आर्थिक असमानता मौजूद है। धनी और गरीब छात्रों के जीवन में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है। यह असमानता केवल आर्थिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक भी है। उदय प्रकाश दिखाते हैं कि आधुनिक विकास के बावजूद समानता का सपना अधूरा है।

**शिक्षा व्यवस्था की विडंबना :** कहानी में शिक्षा व्यवस्था की अनेक विसंगतियाँ सामने आती हैं।

- शिक्षा का व्यवसायीकरण।
- अवसरों की असमानता।
- प्रतिभा की उपेक्षा।
- भ्रष्ट प्रशासनिक व्यवस्था।
- राजनीतिक हस्तक्षेप।

विश्वविद्यालय ज्ञान के मंदिर संघर्ष, प्रतिस्पर्धा और सत्ता का केंद्र बनता दिखाई देता है।

**महानगरीय जीवन का चित्रण :** महानगर अवसर देता है, लेकिन अकेलापन भी बढ़ाता है।कहानी में व्यक्ति भीड़ के बीच भी अकेला है। संबंध अस्थायी हैं। समय का अभाव है। प्रतिस्पर्धा बढ़ती जाती है। यही उत्तर-आधुनिक महानगरीय जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी है।

**भाषा-शैली :** उदय प्रकाश की भाषा अत्यंत सहज, बोलचाल की तथा व्यंग्यात्मक है।उनकी शैली की प्रमुख विशेषताएँ

- यथार्थपरक चित्रण।
- संवादात्मक प्रस्तुति।
- प्रतीकों का प्रभावी प्रयोग।
- व्यंग्य और विडंबना।
- स्थानीय एवं आधुनिक शब्दावली का संतुलित प्रयोग।

इसी कारण उनकी कहानी पाठक के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है।

**हाशिए का जीवन :** उदय प्रकाश की लगभग सभी कहानियों की तरह इस कहानी में भी सामान्य और उपेक्षित लोगों की उपस्थिति महत्वपूर्ण है।जो लोग व्यवस्था के केंद्र में नहीं हैं, वही कहानी के वास्तविक पात्र हैं। लेखक उनके संघर्ष, असुरक्षा और अस्तित्व की लड़ाई को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

**समकालीन प्रासंगिकता :** आज भी यह कहानी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी अपने प्रकाशन काल में थी। आज सोशल मीडिया, उपभोक्तावाद, ब्रांड संस्कृति, निजी विश्वविद्यालय, डिजिटल जीवन और कृत्रिम संबंधों ने मनुष्य

के जीवन को और अधिक जटिल बना दिया है। इसलिए कहानी का सामाजिक संदेश आज भी पूरी तरह प्रासंगिक है।

**निष्कर्ष :** पीली छतरी वाली लड़की केवल प्रेम-कहानी नहीं बल्कि उत्तर-आधुनिक भारतीय समाज का बहुआयामी दस्तावेज है। इसमें वैश्वीकरण, बाज़ारवाद, उपभोक्तावाद, वर्गीय विषमता, शिक्षा व्यवस्था की विसंगतियाँ, स्त्री की स्वतंत्र पहचान तथा व्यक्ति के अस्तित्व-संकट का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। उदय प्रकाश ने प्रतीकों, व्यंग्य और यथार्थपरक भाषा के माध्यम से समकालीन समाज की जटिलताओं को गहरी संवेदना के साथ प्रस्तुत किया है। यह कहानी हिंदी कथा-साहित्य में उत्तर-आधुनिक विमर्श की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है और आज भी अपने समय तथा समाज को समझने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

**संदर्भ ग्रंथ :**

1. उदय प्रकाश, पीली छतरी वाली लड़की, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. गोपीचंद नारंग, उत्तर आधुनिकता और भारतीय साहित्य, वाणी प्रकाशन।
3. सुधीश पचौरी, उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श, राजकमल प्रकाशन।
4. नामवर सिंह, कहानी : नई कहानी, राजकमल प्रकाशन।
5. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, राजकमल प्रकाशन।
6. मैनेजर पांडेय, साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, वाणी प्रकाशन।

•